राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

धूर्तानां षड्यन्त्रं यः, समये नावबुध्यते ।
पश्चात् क्षीणः परं तापं, करोत्याजीवनं महत् ॥२३३॥

जो धूर्तों के षड्यन्त्र को समय पर नहीं जान लेता, वह बाद में उस षड्यन्त्र से क्षीण हुआ जीवन भर बहुत बहुत पश्चात्ताप करता रहता है ।

Who does not recognise on time the game/machinations of the cheats, after being cheated by their machinations, regrets his whole life.

धूर्तास्तु स्वार्थ-सिद्धयर्थं, भाषन्ते हि मनोहरम् ।
बोद्धारः किं परं तेषु, विश्वसन्ति मनागपि ॥२३४॥

धूर्त व्यक्ति तो स्वार्थ-सिद्धि के लिये निश्चित रूप से मनोहर ही भाषण करते हैं । पर क्या उन पर बुद्धिमान् थोड़ा सा भी विश्वास करते हैं ?

A devious person always talks nicely to achieve personal goals. But do the wise people believe them even a little?

न किञ्चित् परमानन्तं, संसारे क्षणभङ्गुरे ।
यशः – शरीरमेवात्र, कदापि न विनश्यति ॥२३५॥

इस क्षणभङ्गुर संसार में कुछ भी परमानेंट (स्थायी) नहीं है । यहाँ केवल यशरूपी शरीर ही कभी विनष्ट नहीं होता ।

Nothing is permanent in this transient world. Here only the body of fame is not destroyed. (Here only through fame one can live forever).

नग्ना स्त्री शोभते नैव, निन्दनीयस्तदीक्षकः ।

नग्नता यन्त्र्यते चेन्न, दुराचारः प्रवर्धते ॥२३६॥

नग्न स्त्री शोभित नहीं होती है । उसको देखने वाला निन्दनीय होता है । यदि नग्नता नियन्त्रित नहीं की जाती है तो दुराचार बढ़ जाता है ।

A naked woman is not graceful. Shameful is the one who watches her. If the nakedness is not controlled, misdemeanour grows.

नान्दा यदि सन्तुष्टा, किञ्चिद् दुःखं क्वचिन्नहि ।

नान्दा सुगुणा लभ्या, सौभाग्यादेव काचन ॥२३७॥

यदि ननद सन्तुष्ट है तो कुछ भी कहीं दुःख नहीं है, सद्गुणवती ननद सौभाग्य से ही कोई मिलती है ।

If the sister in law is satisfied, there is nowhere any problem. Everyone wants to meet a virtuous sister-in-law.

न मठे मन्दिरे नापि, चर्चे वा मज्जितौ न च ।

ईश्वरस्य निवासोऽस्ति, केवलं रोग–पीडिते ॥२३८॥

ईश्वर का निवास न मठ में है, न मन्दिर में, न चर्च में और न ही मस्जिद में है , उसका तो निवास रोग से पीडित व्यक्ति में है ।

God does not live in math nor temple nor church nor mosque. God lives in the person who is sick.

न मांस–भक्षणं कार्यं, मांसाहारो नृणाँ नहि ।

मांसं भक्षन्ति ये नूनं, पिशाचाः सन्ति ते जनाः ॥२३९॥

मांसभक्षण नहीं करना चाहिये। मांसाहार मनुष्यों का नहीं है । जो मांस–भक्षण करते हैं, वे निश्चित ही पिशाच हैं ।

Meat should not be eaten. Humans are not meat-eaters. The one who eats meat is surely a demon.